हरिकथामृथसार
बिंबॊपासन संधि

हरिकथामृथसार गुरुगळ करुणधिम्धापनिथु पॆळुवे
परम भगवध्भक्त्थरिधनाधरधि कॆळुवुधु

मुक्त बिंबनु तुरिय जीव
न्मुक्तबिंबनु विश्व भव सं
सक्त बिंबनु तैजसनु असृज्यरिगे प्राज्ञ्न्य
शक्तनादरु सरिये सवॊ
द्रिक्त महिमनु दु:खसुखगळ
व्याक्तमाडुतलिप्प कल्पांतदलि बप्परिगे २४–०१

अन्ननामक प्रकृतियोळग
च्छिन्ननागिह प्राज्ञ्न्य नामदि
सोन्नोडल मोदलादवरोळन्नाद तैजसनु
अन्नदांबुदनाम विश्वनु
भिन्ननाम क्रियगळिंदलि
तन्नोळगे ता रमिप पूणानंद ज्ञ्न्यानघन २४–०२

बूदियोळगडगिप्पनलनॊ
पादि चॆतन प्रकृतियोळ
गन्नादनन्नाह्वयदि करेसुव ब्रह्म शिवरूपि
ऒदनप्रद विष्णु परमा
ह्लादवीवुत तृप्तिपडिसुव
गादमहिमन चित्रकमवनाव बण्णिसुव २४–०३

नाद भॊजन शब्ददोळु बिं
दॊदनॊदकदोळगे घॊषनु
वाददोळु शांताख्य जठराग्नियोळगिइरुतिप्प
वैदिकसुशब्ददोळु पुत्र स

www.vousigma.com

हॊदरानुजरोळति
शांतन पादकमलवनवरत चिंतिसु ई परियलिंद २४–०४

वेदमानि रमानुपास्य गु
णॊदधि गुणत्रय विवजित
स्वॊदरस्थित निखिळ ब्रह्मांडाद्विलअणनु
साधुसम्मतवेनिसुतिह निषु
सीद गणपतियेंब श्रुति प्रति
पादिसुवुदनवरतवन गुणप्रांतगाणदले २४–०५

करेसुवनु मायारमण ता
पुरुषरूपदि त्रिस्थळगळोळु
परम सत्परुषाथद महत्तत्वदोळगिद्दु
सरसिजभवांड स्थित स्त्री
पुरुष तन्मात्रगळ ऐकॊ
त्तरदशेंद्रियगळ महाबूतगळ निमिसिद २४–०६

ई शरीरगे पुरुष त्रिगुणदि
श्रीसहित तानिद्दु जीवरि
गाश लॊभाज्झन्यान मद मत्सर कुमॊह उध
हास हरुष सुषुप्ति स्वप्नपि
पासजाग्रति जन्म स्थिति मृति
दॊष पुण्य जयापजय द्वंद्वगळ कल्पिसिद २४–०७

रिविध गुणमय देह जीवके
कवचदंददि तोडिसि कम
प्रवहदोळु संचारमाडिसुतिप्प जीवरन
कविसि मायारमण मॊहव
भवके कारणनागुवनु सं
श्रवण मननव माळपरिगे मॊचकनेनिसुतिप्प २४–०८

साशनाह्वय स्त्रीपुरुषरोळु
वासवागिहनेंदरिदु वि
श्वासपूवक भजिसि तॊषिसु स्वावरॊत्तमर
क्लेशनाशन अचलगळोळु प्र
काशिसुतलिहनशनरूपॊ
पासनव माळपरिगे तॊपनु तन्न निजरूप २४–०९

प्रकारांतर चिंतिसुवदी
प्रकृतियोळु विश्वादिरूपव
प्रकटमाळपेनु यथामतियोळु गुरुकृपाबलदि
मुकुरनिमित सददोळु पॊगे
स्वकीय रूपव कांब तेरदलि
अकुटिलात्म चराचरदि सवत्र तॊरुवनु २४–१०

परिच्छेदत्रय प्रकृतियोळ
गिरुतिहनु विश्वादिरूपव
धरिसि आत्मादित्रिरूपव ई षणत्रयदि
सुरुचि ज्ञन्यानात्म स्वरूपदि
तुरियनामक वासुदेवन
स्मरिसु मुक्तिसुखप्रदायकनीतनहुदेंदु २४–११

कमलसंभवजनक जड जं
गमरोळगे नेलेसिद्दु क्रम व्यु
त्क्रमदि कमव माडि माडिसुतिप्प बेसरदे
अम आम अमीहनाह्वय
सुमनससुररोळगे अहं
ममन मम एंदी युपासनेगैव प्रांतदलि २४–१२

ई समस्त जगत्तु ईशा
वास्यवेनिपुदु कायरूपवु
नाशवादरु नित्यवे सरि कारण प्रकृति

www.yousigma.com

श्रीशगे जडप्रतिमेयेनिपुदु
मासदोम्मेगु सन्निधानवु
वासवागिह नित्य शालिग्रामदॊपादि २४–१३

ऐकमेवाद्वितीय रूपा
नेक जीवरोळिद्दु ता प्र
त्येक कमव माडि मोहिसुतिप्प तिळिसदले
मूक बधिरांधादि नामक
ई कळेवरदोळगे करेसुव
माकळत्रन लौकिक महामहिमेगेनेंबे २४–१४

लॊकबंधुलॊकनाथ वि
शॊक भक्तर शॊकनाशन
श्रीकराचित सॊकदंददलिप्प सवरोळु
साकुवनु सज्जनर परम कृ
पाकरेश पिनाकिसन्नुत
स्वीकरिसु वानतरु कोट्ट समस्त कमगळ २४–१५

अहित प्रतिमेगळेनिसुवुवु
देह गेहापत्य सति धन
लॊह काष्ट शिला मृदात्मकवाद द्रव्यगळु
स्नेहदलि परमात्म एनगि
त्तीहनेंदरिदनुदिनदि स
म्मोहकोळगागदले पूजिसु सवनामक २४–१६

श्रीतरुणिवल्लभगे जीवरु
चेतनप्रतिमेगळु ऒत
प्रोतनागिद्देल्लरोळु व्यापार माडुतिह
हॊत सवेंद्रियगळोळु सं
प्रीतियिंदुंडुणिसि विषय नि
वात देशग दीपदंददलिप्प निभयदि २४–१७

भुत सॊकिद मानवनु बहु
मातनाडुव तेरदि महद
द्भूत विष्ण्वावॆशदिंदलि वतिपुदु जगवु
कैतवॊक्तिगळल्ल शॆष फ
णातपत्रगे जीवपंचक
व्रातवेंदिगु भिन्नपादाह्वयदि करेसुवुदु २४–१८

दिवियोळिप्पुवु मूरु पादग
ळवनियोळगिहुदोंदु ई विध
कविभिरीडित करेसुव चतुष्पातु तानेंदु
इवन पादचतुष्टयगळनु
भवकॆ तंदु निरंतरदि उ
द्भवन सख सवांतरात्मकनेंदु स्मरिसुतिरु २४–१९

वंशबागलु बेळेय कंडु न
रांशदलि शॊभिपुदु बागद
वंश पाशदि कट्टि ऎरुव डोंब मस्तकके
कंसमदन दासरिगे नि
स्संशयदि वंदिसदे ना वि
द्वांसनेंदहंकरिसे भवगुणदि बंधिसुव २४–२०

ज्यॊतिरूपगे प्रतिमेगळु सां
कॆतिकारॊपित सुपौरुष
धातु सप्तक धैय शौयॊदाय चातुय
मातु मान महत्व सहन सु
नीति निमलदॆश ब्राह्मण
भूतपंचक बुद्धि मोदलादिंद्रिय स्थान २४–२१

जीवराशियोळमृत शाश्वत
स्थावरगळोळु स्ठाणुनामक

नावकालदलिप्पनजितांतनेंदेनिसि
गॊविदांपति गायनप्रिय
सावयव साहस्रनाम प
रावरेश पवित्रकम विपश्चितनु साम २४–२२

माधवन पूजाथवागि नि
षेधकमव माडि धन सं
पादिसलु सत्पुण्य कमगळेनिसिकोळुतिहवु
स्वॊदरंभणाथ नित्यदि
साधुकम माडिदरु सरि
ऐदुवनु देहांतरव संदेहविनितिल्ल २४–२३

अपगताश्रय एल्लरोळगि
द्दुपमनेनिपानुपम रूपनु
शफरकेतन जनक मोहिप मोहकन तेरदि
तपनकोटि समप्रभासित
वपुवेनिप कृष्णादि रूपक
विपगळंतुंडुणिप सवत्रदलि नेलसिद्दु २४–२४

अडवियोळु बित्तदले बेळेदिह
गिडद मूलिके सकल जीवर
ओडलोळिप्पामयव परिहरगैसुवंददलि
जडजसंभवजनक त्रिजग
द्वडेय संतैसेनलु अवरि
द्देडेगे बंदोदगुवनु भक्तर भिडेय मीरदले २४–२५

श्रीनिकेतन तन्नवर दे
हानुबंधिळंते अव्यव
धानदलि नेलिसिप्प सवद सकल कामदनु
ऎनु कोट्टदु भुंजिसुत म
द्दानेयंददि संचरिसु म

त्तेनु बॆडदे भजिसुतिरु अवनंघ्रिकमलगळ २४–२६

बॆडदले कोडुतिप्प सुररिगे
बॆदिदरे कोडुतिहनु नररिगे
बॆदि बळलुव दैत्यरिगे
कोडनोम्मे पुरुषाथ
मूढरनुदिन धमकमव
माडिदरु सरि अहिकफलगळ
नीडि उन्मत्तरनु माडि महानिरयवीव २४–२७

तरणि सवत्रदलि किरणव
हरहि तत्तद्वस्तुगळननु
सरिसि अदरदरंते चायव कंगोळिप तेरदि
अरिधराजानॆज जगदोळ
गिरुव छायातपनेनिसि सं
करुषणाह्वय अवरवर यॊग्यतेगळंतिप्प २४–२८

ई विधदि सवत्र लकुमी
भू वनितेयर कूडि तन्न क
ळाविशॆषगळेल्ल कडेयलि तुंबि सॆव्यतम
सॆवकनु तानेनिसि माया
देविरमण प्रविष्टरूपक
सॆवे माळप शरण्य शाश्वतकरुणि कमलाअ २४–२९

प्रणवकारण काय प्रतिपा
द्यनु परात्पर चॆतनाचॆ
तन विलअणनंतसत्कल्याण गुणपूण
अनुपमनुपासित गुणॊदधि
अनघ अजितानंत निष्किं
जनप्रिय निविकार निराश्रयाव्यक्त २४–३०

गॊप भीय भवांधकारके
दीपवोदगे सकल सुखसद
नॊपरिग्रहवेनिसुतिप्पुदु हरिकथामृतवु
गॊपति जगन्नाथविट्ठल स
मीपदलि नेलेसिद्दु भक्तर
नापवगर माडुवनु महदु:खभवदिंद २४–३१

www.yousigma.com